महावीर जयंती के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी अभिभाषण

जय जिनेंद्र,
महावीर जयंती के इस पवित्र कार्यक्रम में मुझे शामिल करने के लिए आप सभी का मैं हृदय से आभारी हूं और हमारे जैन समाज के सभी लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलना सिखाया। उनके शांति और अहिंसा के संदेश से हमारी सांस्कृतिक विरासत समृद्ध हुई है। आज जब विश्व के समक्ष कई चुनौतियां खड़ी हैं, तब भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और करुणा से युक्त दर्शन का महत्व और बढ़ गया है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की भगवान महावीर की शिक्षाएं हर युग में और हर व्यक्ति के लिए प्रासंगिक हैं। इन शिक्षाओं का पालन करके एक ऐसे समावेशी और समतामूलक समाज का निर्माण किया जा सकता है जहां सभी को समान अवसर मिलें और समन्वय एवं सद्भाव को बढ़ावा मिले।

मुझे यह जानकर खुशी है कि गुवाहाटी में पिछले कई वर्षों से महावीर जयंती का आयोजन सामूहिक रूप से मनाया जा रहा है। इसमें प्रमुख रूप से श्री दिगंबर जैन पंचायत, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, श्री

साधु मार्गी जैन श्रावक संघ, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक समाज, श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर मार्गी संघ आदि संस्थाएं सक्रिय रूप से महावीर जयंती का कार्यक्रम एक साथ करती आई हैं। सभी संस्थाएं अपने-अपने स्तर पर असम के स्थानीय समाज के सुख-दुःख में भी बराबर शामिल होती हैं। भगवान महावीर को सभी धर्म, सभी संप्रदाय के लोग समान रूप से मनाते आए हैं। बहतर समाज की सभी संस्थाएं सक्रिय रूप से व स्वतंत्र रूप से अपना-अपना सामाजिक कार्य व धार्मिक कार्य करती आई हैं। लेकिन एक महावीर जयंती ही एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें संपूर्ण समाज सामूहिक रूप से एक साथ एक स्थान पर मनाती आई हैं। भगवान महावीर के "जियो और जीने दो" का संदेश पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण है और इस सिद्धांत को नीतिगत रूप से सभी संप्रदाय के लोग मानते चले आ रहे हैं। पांचों समुदाय के लगभग पांच हजार परिवार है गुवाहाटी महानगर में। सभी घटकों में आपस में मेलजोल, एकता व सौहार्दपूर्ण संबंध बिना किसी भेदभाव के कायम है।

मुझे यह भी बताया गया है कि गुवाहाटी में जैन समाज के द्वारा एक जैन विद्यालय सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। इसके अलावा स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न शिविरों का आयोजन भी समाज द्वारा किया जाता है। जिसमें से प्रमुख हैं - ऑक्सीजन सेवा, रक्तदान सेवा और चिकित्सा सेवा आदि। फिजियोथेरेपी सेंटर भी समाज द्वारा सफलतापूर्वक चलाए जा रहे हैं। इसमें यह बात नहीं है कि सिर्फ जैन समाज के लोग ही इससे लाभान्वित हो रहे हो। इससे स्थानीय इतर समाज के लोग भी इन सेवाओं का भरपूर लाभ उठाते हैं। कोरोना महामारी के दौरान भी समाज की संस्थाओं ने शारीरिक और आर्थिक तौर पर जरूरतमंदों की भरपूर

मदद की है। समाज की महिलाएं भी समाज सेवा के कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। समाज की महिलाओं ने शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

गुवाहाटी में बसने वाला बृहतर जैन समाज का इतिहास लगभग 250 से 300 साल पुराना है।असम की कला, साहित्य व संस्कृति की उन्नति में भी समाज का भरपूर अवदान रहा है। व्यवसाय वाणिज्य के विकास में भी समाज का योगदान किसी मायने में कम नहीं है। असम में सकल जैन समाज बृहत्तर मारवाड़ी समाज का एक अंग स्वरूप है।

मैं महावीर जयंती के इस पावन अवसर पर जैन समाज के सभी भाई बहनों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ तथा असम हर क्षेत्र में नित नए कीर्तिमान स्थापित करता रहे - इसकी कामना करता हूँ।

आप सभी को पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद।
जय हिंद !